International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 97-98

नारी स्वतन्त्रता और गांधी जी का दृष्टिकोण

डॉ0 रानू शर्मा

विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, के0ए0 (पी0जी0) कॉलेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

भारतीय 'जीवन–दर्शन' में जिसे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' कहकर सम्मानित किया, उसी जीवन दर्शन के पोषकों ने उसे अबला, कुलटा जैसे शब्दों से सम्बोधित करते हुए उसके सामाजिक और आर्थिक अधिकारों पर ही डाका नहीं डाला उसे शिक्षा, समानता, सम्मान और पोषण जैसे प्राथमिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया। नारी जीवन का शोषण भारत में 'युग' बनकर इतिहास के पन्नों पर काले अध्याय के रूप में अंकित हो गया। भारत के पुर्ननिर्माण में अपना सर्वस्व लगा देने वाले महामानव मोहनदास करमचन्द्र 'गांधी' ने नारी समाज को इस अंध–युग से निकालने की वकालत की। गांधी जी के विचार स्त्री के सम्मान और सुरक्षा को लेकर आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे। आज नगरों से लेकर महानगरों तक स्त्री असुरक्षित हैं राजधानी दिल्ली जैसी जगहों पर भी उसे सार्वजनिक रूप से लूटा–खसोटा और अपमानित किया जा रहा है। गांधी जी कहा करते थे कि ''जब तक एक भी ऐसी स्त्री मौजूद है जिसे हम अपनी लम्पटता का शिकार बनाते हैं, तब तक हम सब पुरुषों का सिर शर्म के मारे नीचा रहेगा।

महिलाओं को 'परदे के भीतर' कैद कर देने पर भी गांधी जी आक्रोशित थें उनका मानना था कि परदे के भीतर किसी भी पवित्रता को सुरक्षित कैद रखा जा सकता है। वे कहते थे कि–''पवित्रता परदे को आड़ में रखने सेनहीं पनपती। बारह से यह लादी नहीं जा सकती। परदे की दीवार से उसकी रक्षा नहीं की जा सकती। उसे तो भीतर से ही पैदा होना होगा।

मूल शब्द: जीवन–दर्शन, प्राथमिक अधिकारों, नारी स्वतन्त्रता।

प्रस्तावना

नारीयाँ सामाजिक कैनवास पर उकेरी गई कोई अस्पष्ट सी आकृतियाँ नहीं है, और न ही वे अंधेरों में चलने वाली धुधंली और अपरिचित परछाईयां हैं, वे सृष्टि के शाष्वत आलोक की आत्मा हैं, जिससे सृजन की करोड़ों किरणों ने फूटकर इस संसार की संरचना को प्राण शक्ति दी है। हम जिस सुन्दर और आकर्षित संसार को देखकर मुग्ध हैं, उसमें रंगबिरंगी तितलियाँ हों, या चूँचूँ करती चिड़ियां, अर्थात् सम्पूर्ण 'जन्तु जगत' हो, या चित्ताकर्षक उपवन मनमोहक वृक्षावलियाँ, पुष्प, कलियाँ अर्थात् सम्पूर्ण 'वनस्पति जगत' सभी की संरचना बिना मादा के संभव नहीं थी, फिर 'मानव–जगत' का सृजन बिना मानवी के कैसे संभव होता? चाराचर को अपनी योजना से संरचित करने वाले विधाता ने, जिस शक्ति को सृजन की संवाहिका मानकर स्वीकारा हो, उसे ही मानव 'समाज' ने दोयम दर्जे का स्थान देकर उसे अपने पीछे ही खड़ा नहीं किया, बल्कि उसके मौलिक व नैसर्गिक अधिकारों को छीनकर उसे प्रतिड़ित करने का अपराध भी किया है।वे नारी सामर्थता पर उंगली उठाने वालों से कहते हैं कि ''स्त्री क्या है?'' साक्षात त्याग मूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है, तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।''[1]

गांधी जी नारी को पुरुष के समान ही मानते हैं। उनका स्पष्ट अभिमत है कि दोनों का शक्ति और संसार बन्धन समान है और मोक्ष का अधिकार भी दोनों को समान हैं।''[2] वे स्त्री को चारित्रिक गुणों की दृष्टि से भी पुरुष से आगे मानते हैं। वे स्पष्ट कहते हैं कि ''स्त्री और पुरुष में चरित्र की दृष्टि से स्त्री का आसन ज्यादा ऊँची है, क्योंकि आज भी वह त्याग, मूक तपस्या, श्रद्धा और ज्ञान की मूर्ति है। पुरुष भले ही अहंकारपूर्ण यह मान ले कि स्त्री की अपेक्षा उसका ज्ञान ज्यादा ऊँचा है, लेकिन उसकी स्वाभाविक सूझ पुरुष के ज्ञान से ज्यादा सिद्ध हुयी है। राम के पहले सीता और कृष्ण से पहले राधा का नाम उल्लेख अकारण नहीं है, उसका उचित कारण है।''[3] गांधी जी स्त्री को अहिंसा की साक्षात प्रतिमूर्ति मानते हैं वे कहते है कि ''स्त्री अहिंसा की मूर्ति है। अहिंसा का अर्थ है अनन्त प्रेम और उसका अर्थ है कष्ट सहने की अनन्त शक्ति। की माता, स्त्री से बढ़कर इस शक्ति का परिचय अधिक से अधिक मात्रा में और किससे मिलता है।''[4] मुझे मंजूर है कि पुरुष जाति का नाश हो जाय, मगर यह मंजूर नहीं कि भगवान की पवित्रम सृष्टि को अपनी वासना का शिका बनाकर हम पशुओं से भी गये बीते बन जायें।''[5]

गांधी जी स्त्री पर हो रहे किसी भी सामाजिक, मानसिक, शारीरिक आदि शोषणों के सर्वथा विरूद्ध थे यहाँ तक कि वे अनमेल विवाह के भी विरोध में थे। वे मानते थे कि–''यह बाल विवाह का रिवाज जितना समाज के लिए घातक है उतना ही बालिका के शरीर का सत्यानाश कर डालती है।''[6] वे इस सम्बन्ध में स्पष्ट कहते थे कि ''जो लड़की गोद में बैठने लायक ही हो, उसे पत्नी बना लेना धर्म तो नहीं है, लेकिन अधर्म की पराकाष्ठा जरूर है।''[7] गांधी जी ने इस सम्बन्ध में स्त्रियों की जागरूकता के लिए भ्झी आह्वान किया, साथ ही उन्होंने इस कार्य के लिए अखिल भारतीय महिला संघ और वाई0आई0ए0 को भी सक्रिय कर, इस सम्बन्ध में सामाजिक जागरूकता बढ़ाई।

गांधी जी ने स्त्री जीवन के उन सभी पक्षों को अपने विचार और कार्य का आधार बनाया जिसमें स्त्री का शोषण हो रहा था। विधवाओं पर हो रहे अत्याचारों पर भी गांधी जी की दृष्टि गई और उन्होंने हिन्दू समाज को चेतावनी देते हुए कहा कि–''जब तक हमारे यहाँ हजारों विधवायें रहेंगी, तब तक हम ऐसी सुरंग पर बैठे हैं, जो किसी क्षण भभक कर फूट सकती है। अगर हमें शुद्ध होना है, अगर हम हिन्दू धर्म को बचाना चाहते हैं तो जबरदस्ती के वैधव्य का यह जहर निकाल ही डालना चाहिये।''[8] गांधी जी ने विधवा के पुनर्विवाह करने की बात को समाज के समक्ष रखा। वे इस बात के भी प्रबल विरोधी थे कि बाल–विधवाओं पर अत्याचार हो रहे थे।'' धर्म के नाम पर तीन लाख ऐसी भारतीय कन्याओं पर वैधव्य आरोपित था, जिन्हें यह भी आभास नहीं था कि विवाह क्या होता हे। इससे गुप्त बुराईयाँ शुरू हुई तथा धर्म का तिरस्कार हुआ। गांधी जी की यह आस्था थी कि बाल विधवा को कुंआरी माना

जाना चाहिये जो न केवल पुनर्विवाह के लिए बल्कि अच्छे और अपेक्षित विवाह के लिए भी योग्य है।''[9]

''[10] गांधी जी ने दहेज प्रथा के दानवीय प्रचलन पर भी क्षोभ प्रकट किया तथा उन्होंने इसे कुप्रथा बताया। गांधी जी की मान्यता थी कि ''पैसे के लालच से किया गया विवाह, विवाह नहीं है, एक नीच काम है।''[11] वे कहते थे कि–''दहेज को मिटाने वाले रिवाज की निन्दा करने वाला जोरदार लोकमत पैदा होना चाहिये और जो युवक इस तरह के पाप के पैसे से अपने हाथ गंदे करें, उन्हें समाज से बाहर निकाल देना चाहिये।''[12] गांधी जी स्त्री शिक्षा के ही पक्षधर नहीं थे बल्कि वे चाहते थे कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह रोजगार करें, ताकि वे अपने जीवन के सभी निर्णय स्वतन्त्रता पूर्वक ले सकें। वे कहते हैं कि–''माँ–बाप अगर लड़कों की तरह लड़कियों को भी ऐसी शिक्षा दें कि वे वे स्वतन्त्र होकर अपनी जीविका कमा सके तो उन्हें लड़कियों के लिए वर ढूँढ़ने की चिन्ता नहीं करनी पडेगी।''[13] स्त्रियों के प्रति समाज के पर्याप्त कुप्रथाऐं प्रचलित थीं और गांधी जी इन सभी के विरूद्ध थे, तथा समाज को इन कुप्रथाओं के विरूद्ध खड़ा करने का प्रयास कर रहे थे। इधर उन्हें स्त्री की विभिन्न अधिकारों की चिन्ता थी। समाज में अपना अधिकार खो चुकी स्त्री को, वे पुरुष के समान लाकर खड़ा कर देना चाहते थे। वे कहते हैं कि ''जिस रूढ़ि और कानून के बनाने में स्त्री का कोई हाथ नहीं था, और जिसके लिए सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार हैं, उस कानून और रूढ़ि के जुल्मों ने स्त्री को लगातार कुचला है। अहिंसा की नींव पर रचे गये जीवन की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है, उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।''[14]

गांधी जी कहते हैं कि ''स्त्री पुरुष की गुलाम नहीं है वह अर्धांगिनी है, उसको मित्र समझना चाहिये''[15] गांधी जी महिलाओं को भी सचेत करते हुए कहते हैं कि–उन्हें घर के काम–काजों में ही अपना सम्पूर्ण समय खर्च नहीं कर देना चाहिये। क्योंकि अधिकांशतः तो स्त्री का समय घर के आवश्यक काम काज करने में नहीं लगता, बल्कि अपने पति के अहंकार मूलक सुख की ओर अपने मिथ्याभिमान की पूर्ति में खर्च होता है। मेरे विचार में स्त्रियों की यह घरेलू दासता हमारे जंगलीपन की निशानी है। अब समय आ है कि हमारी स्त्रियाँ इस जुए से मुक्त कर दी जायें। घर के काम में औरतों का सारा वक्त खर्च नहीं जो जाना चाहिये।''[16] गांधी जी का स्त्रियों के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण बेहद आधुनिक और प्रशंसनीय था। वे उन्हें सामाजिक व आर्थिक अधिकार दिलाने के ही पक्षधर नहीं थे, बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी वे महिलाओं की समभागिता के पक्ष में थे, किन्तु वे यह भी स्पष्ट कर देना चाहते थे कि स्त्रियों को राजनीति में पुरुषों पर निर्भर नहीं रहना चाहिय बल्कि स्वतन्त्र निर्णय के साथ खड़ा होना चाहिये। वे कहते हैं कि 'आज–कल बहिनें राजनीति में कम हिस्सा लेती हैं, और जो लेती हैं, उनमें से अधिकांश स्वतन्त्र विचार नहीं करतीं। जैसा माता–पिता या पति कहते हैं, वैसा करती हैं, और अपने पराधीनता महसूस करते स्त्रियों के खास हकों की दलील पर नजर फेंकती हैं इसके बदले उन्हें स्वतन्त्र रीति से विचार करना चाहिये।''[17]

गांधी जी के विचार स्त्रियों के सम्बन्ध में क्रान्तिकारी थे उन्हें क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने तत्समय में महिला संगठनों को सक्रिय भी किया था। फलस्वरूप समाज मे उनके विचारों का व्यापक प्रचार प्रसार ही नहीं हुआ, बल्कि देश और समाज के कार्य के लिए गाँव–गाँव में महिलाओं के समूह उठ खड़े हो गये, तथा महिलाओ में अधिकारों के

प्रति जागरूकता का संचार हुआ। गांधी जी विचारों से प्रभावित होकर ही अनेक प्रमुख महिलाओं ने सम्पूर्ण राष्ट्र में नारी जागरण का कार्य किया। यथार्थ तो यह है कि गांधी के स्त्रियों को लेकर व्यक्त किये गये विचारों का ही प्रतिफल था कि स्वतन्त्रता के बाद संविधान में नारियों को पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त हुए, तथा महिलाऐं शिक्षा, समाज और रोजगार की दिशा में आगे आईं। आज भी नारी स्वतन्त्रता समानता, सुरक्षा की दृष्टि से गांधी जी के विचार उतने ही प्रासंगिक व जीवत हैं। भारतीय नारी उनके इन सद्प्रयासों के लिए सदैव उनकी उपकृत रहेगी–

जिनका विचार शोषित नारी के साथ खड़ा सम्बल देता थां
जिनका आग्रह संकीर्ण समाज को पथ देता था।
जिनके प्रयास ने नारी जीवन को आधार दिया था।
उन्हीं गांधी ने नारी स्वतन्त्रता को साकार किया था।

संन्दर्भ :–

1. हिन्दीनवनीत – 25 दिसम्बर 1921
2. विनोवा – स्त्री–शक्ति पृ0 10
3. यंग इण्डिया – 15 सितम्बर 1921
4. 'हरिजन' 18 मई 1938
5. यंग इण्डिया – 21 जुलाई 1921
6. यंग इण्डिया – 26 अगस्त 1926
7. यंग इण्डिया – 18 अगस्त 1926
8. यंग इण्डिया – 05 जुलाई 1926
9. सुन्दरम् आई0 गांधियन भाव – पृ0 29
10. यंग इण्डिया – 13 फरवरी 1927
11. हिन्दी नवजीवन – 06 सितम्बर 1928
12. यंग इण्डिया – 21 जून 1928
13. हरिजन – 5 सितम्बर 1936
14. गांधी महात्मा रचनात्मक कार्यक्रम – पृ0 32
15. हिन्दी नवजीवन – 4 मार्च 1926
16. हरिजन – 8 जून 1940
17. हरिजन – 21 अप्रैल 1946